International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.4 No.15 Mar-Apr 2023

आधुनिक तकनीकी और हिंदी कथा-साहित्य

प्रा. नरेंद्र संदीपन फडतरे
सहा. प्राध्यापक एवं अध्यक्ष,हिंदी विभाग,
श्रीमती मीनलबेन महेता कॉलेज,पंचगनी,सातारा
Corresponding Author- प्रा. नरेंद्र संदीपन फडतरे

वर्तमान समय सूचना प्रौद्योगिकी का युग है, सूचना प्रौद्योगिकी एक सरल तंत्र है जो तकनीकी प्रयोग के सहारे सूचनाओं का संकलन, प्रक्रिया व संप्रेषन करता है। कंप्यूटर व सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जो विकास हुआ है वह भाषा के क्षेत्र में भी मौन क्राँति का वाहक बन कर आया है। अभी तक भाषा जो केवल मनुष्यों के आवशकताओं को पूरा कर रही थी, उसे सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में मशीन व कंप्यूटर की नित नई भाषायी मांगों को पूरा करना पड़ रहा है। यह सर्वज्ञात है कि कंप्यूटर में राजभाषा हिंदी में कार्य करना सुगम बनाया है। हिंदी में कंप्यूटर स्थानीयकरण का कार्य काफी पहले प्रारंभ हुआ और अब यह आंदोलन की शक्ल ले चुका है। हिंदी सॉफ्टवेयर लोकलाइजेशन का कार्य सर्वप्रथम सी- डैक द्वारा 90 के दशक में किया गया था। वर्तमान में हिंदी भाषा के लिये कई संगठन कार्य करते है,

मौजूदा समय में हिंदी 'ग्लोबल हिंदी" में परिवर्तित हो गयी है, आज तकनीकी विकास के युग में दूसरे देशों के लोग भी, भले की विपणन के लिए ही सही, हिंदी भाषा सीख रहे हैं। आज स्थिति यह है कि भारत व चीन के व्यवसायिक संबंधों को बढ़ाने की संभावनाओं के तलाश के लिये लगभग दस हज़ार लोगपेइचिंग में हिंदी सीख रहे हैं। आज से लगभग 45 वर्ष पूर्व कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य आरंभ हुआ और इसी तरह एंकोडिंग व डिकोडिंग के माध्यम से विश्व की विभिन्न भाषाएँ भी कंप्यूटर पर सुलभ होने लगी, इस तकनीकी विकास ने भारतीय भाषाओं को जोड़ा है , कंप्यूटर के माध्यम से विभिन्न सॉफ्टवेयरों,सी-डैक संस्था के हिंदी सीखने सीखाने के विभिन्न कंप्यूटरीकृत कार्यक्रमों जैसे- प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ पाठ्यक्रमों के लिये लीला वाचिक तकनीक के प्रयोग ने भाषा सीखने की प्रक्रिया को विभिन्न भाषा माध्यमों से बिलकुल आसान बना दिया जिससे भाषायी निकटता का उदय हुआ, जिसके वज़ह से भाषायी एकता आना स्वाभाविक था।

इस तकनीकी का असर हिंदी साहित्य पर भी पड़ने लगा हैं। साहित्य दृश्य-श्राव्य, अनुदित, धारावाहिक, समाजमाध्यमों, ने अहम् भूमिका निभाई हैं। हिंदी को ग्लोबल बनाने में इंटरनेट, सोशल मीडिया की अहम भूमिका है। इस मंच के जरिये नवोदित साहित्यकार अपनी लेखनी से आगे बढ़ रहे हैं। वरिष्ठ साहित्यकार भी अब इसी मंच पर हैं। हिंदी को आगे बढ़ाने में हिंदी पत्रकारिता की अहम भूमिका है। हिंदी पत्रकारिता ने रोजगार सृजित किए। मल्टीनेशनल कंपनियां भारत में उत्पाद बेचने के लिए हिंदी की शरण में हैं। स्मार्ट फोन भी हिंदी साहित्य के समर्थन हेतु निरंतर कार्य चल रहा है। कई मोबाइल कंपनियाँ हिंदी टंकण, हिंदी वाइस सर्च व हिंदी भाषा में इंटरफेस की सुविधा प्रदान कर रही है। इसके साथ ही आज आइ पैड पर हिंदी लिखने की सुविधा उपलब्ध है। अंग्रेज़ी के साथ-साथ आज हिंदी भाषा का भी नेटवर्क़ पूरे विश्व में फैलता जा रहा है। जागरण, वेब दुनिया, नवभारत टाइमस, विकिपिडिया हिंदी, भारत कोष, कविता कोष, गद्य कोष, हिंदी नेक्स्ट डॉट कॉम, हिंदी समय डॉट कॉम, आदि इंटरनेट साइटों पर हिंदी सामग्री देखी जा सकती है। इसी कारण जिन नए लेखकोंको साहित्य का प्लाटफॉर्म नहीं मिल रहा था उनको साहित्य का दालान खुल गया हैं।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा ने हिंदी के डिजिटल दुनिया में काफी अहम योगदान किया है। इसकी वेबसाइट हिंदी समय डॉट कॉम पर हिंदी के लगभग एक हजार रचनाकारों की रचनाएं उपलब्ध है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हजारीप्रसाद द्विवेदी, श्यामसुंदर दास आदि की ग्रंथावलियों के साथ-साथ समकालीन रचनाकारों की रचनाओं को भी इसमें स्थान दिया गया है। वर्धा हिंदी शब्द कोश,मानक हिंदी प्रयोग कोशने हिंदी के संवर्धन, विकास एवं आभासी दुनिया के लिए सहज रूप से हिंदी को पहुंचाने में अग्रणी भूमिका का निर्वहन बहुत ही ज़िम्मेदारी से कर रहा है। अब तो हिंदी के कई सर्च इंजन हैं जो किसी भी वेबसाइट का चंद मिनटों में हिंदी अनुवाद करके पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर देते हैं। गूगल,याहू, और फेसबुक भी हिंदी में उपलब्ध हैं। इंटरनेट की दुनिया ने तेजी से अपना कलेवर और मिज़ाज बदला है। भाषाई वर्चस्व को तोड़कर इंटनेट का बाज़ार बोलियों तक पहुँच गया है।आज से लगभग 45 वर्ष पूर्व कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य आरंभ हुआ और इसी तरह एंकोडिंग व डिकोडिंग के माध्यम से विश्व की विभिन्न भाषाएँ भी कंप्यूटर पर सुलभ होने लगी, इस तकनीकी विकास ने भारतीय भाषाओं को जोड़ा है, कंप्यूटर के माध्यम से विभिन्न सॉफ्टवेयरों,सी-डैक संस्था के हिंदी सीखने सीखाने के विभिन्न कंप्यूटरीकृत कार्यक्रमों जैसे- प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ पाठ्यक्रमों के लिये लीला वाचिक तकनीक के प्रयोग ने भाषा सीखने की प्रक्रिया को विभिन्न भाषा माध्यमों से बिलकुल आसान बना दिया।

हिंदी का मुख्य Softwere 'LILA' अथार्त Learn Indian Languages with Artificial Intelligence, एक स्वंय शिक्षण मल्टीमीडिया पैकेज है। यह राजभाषा विभाग द्वारा तैयार किया गया एक निशुल्क सॉफ्टवेयर है जिसके द्वारा प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ स्तर के हिंदी के पाठयक्रमों को विभिन्न भारतीय भाषाओं जैसे कन्नड़, मल्यालम, तमिल, तेलगु, बांग्ला आदि के माध्यम से सीखने, ऑनलाइन अभ्यास, उच्चारण सुधार, स्वमूल्यांकन, आदि की सुविधा उपलब्ध है। मंत्र अथार्त Machine Assisted Translation Tool सीडैक द्वारा विकसित एक मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर है। यह राजभाषा विभाग द्वारा विकसित एक मशीनी साधित अनुवाद है जो राजभाषा के प्रशासनिक, वित्तीय, कृषि, लघु उद्योग, सूचना प्रद्योगिकी, स्वास्थ्य रक्षा, शिक्षा एवं बैंकिंग क्षेत्रों के दस्तावेज़ों का अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद करते हैं। श्रुतलेखन एक सतत स्पीकर इंडीपेंडेंट हिंदी स्पीच रिकगनिश्न सिस्टम है , वह सीडैक , पुणे के एलाइड ए. आइ ग्रुप ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से किया गया है। इसमें प्रयोक्ता माइक्रोफोन में बोलता है तथा कंप्यूटर मेंमौजूद स्पीच टू टेक्स्ट बदल कर लिखता है। हिंदी में शब्द संसाधन के लिये विशेष रूप से तैयार ई-पुस्तक , राजभाषा विभाग की साइट पर उपलब्ध है। भाषायी परस्पर आदान प्रदान के क्रम में भी तकनीकी विकास हुआ है। हिंदी ऑप्टिकल कैरेक्टर के माध्यम से हिडी ओसीआर इंपुट करके ओसीआर आउटपुट में 15-16 वर्ष के पहले की सामाग्री को भी परिवर्तित किया जा सकता है। सीडैक के श्रुतलेखन सॉफ्टवेयर से भाषण/स्पीच से पाठ रूप में पहुँचा जा सकता है। गूगल के टूलों में वाचक, प्रवाचक, गूगल टेक्स्ट टू स्पीच के जरिये पाठ से भाषन की सुविधा उपलब्ध है व गूगल के वायस टाइपिंग के जरिये स्पीच को टेक्स्ट में बदलने की सुविधा उपलब्ध है।गूगल वाइस टाइपिंग में हम गूगल डॉक्स के द्वारा हम अपनी आवाज के माध्यम टाइपिंग करने का आनंद उठा सकते हैं ।

आज हिंदी में अनुवाद का ट्रेंड वहुत तेजी से चल रहा हैं। अनुवाद दो भाषाओं के बीच सेतु का कार्य करता है। तकनीकी के उत्तरोत्तर विकास द्वारा मशीनी अनुवाद टूल बनाना संभव हो सका। आज विश्व के कई देशों के पास अत्यंत ही सक्षम अनुवाद टूल हैं। इनकी सहायता से वैश्विक मंचों पर विभिन्न देशों का आपसी मिलन आसानी से संभव हुआ है। भारत में भी अनुवाद टूल बनाने की दिशा में कई सॉफ्टवेयर बनाए गए हैं जिनमें सी-डैक, आईआईटी कानपुर, आईआईटी मुंबई जैसी संस्थाओं की अहम भूमिका है। इसी कारण भारत की विविध भाषा का साहित्य एक-दुसरी भाषा में साहित्यक के अनुवाद होकर वचन के लिए खुला हो रहा हैं। माइक्रोसॉफ्ट इंडिक लैंग्वेज़ इनपुट टूल भारतीय भाषाओं हेतु एक सरल टाइपिंग टूल है। वास्तव में यह एक वर्चुअल की बोर्ड है जो कि बिना कॉपी-पेस्ट के झंझट के विंडोज में किसी भी

एपलीकेशन में सीधे हिंदी में लिखने की सुविधा प्रदान करता है। यह टूल शब्दकोश आधारित ध्वन्यात्मक लिप्यांतरण विधि का प्रयोग करता है अथार्त हमारे द्वारा जो रोमन में टाइप किया जाता है।

आज चारों तरफ 'डिजिटल भारत' की बात हो रही है। सोशल नेटवर्किंग साइट फेसबुक, टेलीग्राम ट्विटर तथा अन्य साईट पर गाँवों को डिजिटल दुनिया से जोड़ने का काम हो रहा है। तकनीकी विकास में भाषायी एकता दिखती है। जब विभिन्न गाँव डिजिटल दुनिया से जुड़ेंगे तो वैश्विक व भारतीय परिक्षेत्र में विभिन्न गाँवों की विभिन्न भाषाएँ भी तकनीकी का हिस्सा होंगी और उनके बीच संप्रेषणीय आदान-प्रदान होगा जिसमें हम भाषायी एकता देख सकेंगे। यूनिकोड के आगमन से हिन्दी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं के लिए भी कंप्यूटर पर काम करने के लिए आसान प्लेटफॉर्म निर्मित किया। इसके माध्यम से हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में ब्लॉग लिखे जाने लगे, जो कि अब तक केवल कंप्यूटर के आविष्कारक देशों की भाषाओं में लिखे जा रहे थे। आज हिंदी में अनेकों ब्लॉग लिखे और पढे जा रहे हैं, इतना ही नहीं समाचार पत्रों ने भी अब नियमित रूप से ब्लॉग छापने शुरू कर दिए हैं। यूनिकोड ने स्थानीय भाषाओं में टाइपिंग को आसान बनाकर इन्हें सोशल नेटवर्किंग साइट जैसे- ट्विटर, फेसबुक पर भी स्थापित कर दिया है। आज भारत में हजारो एफ़एम चैनल उपलब्ध हैं । साथ ही ई समाचार-पत्रों के चलन ने पत्रकारिता को एक नया स्वरूप दिया है। आज अपनी मातृभाषा में समाचार-पत्र पढ़ने के लिए उस क्षेत्र विशेष में अनिवार्यतः उपस्थित रहना आवश्यक नहीं रहा। लगभग सभी प्रमुख समाचार-पत्रों के ई संस्करण इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। इनके अलावा हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में ई-बुक्स, ई-मैगजीन, ई-कॉमिक्स आदि का प्रसार भी काफी तेज गति से हो रहा है।

निष्कर्ष-

आज 'ग्लोबल हिंदी" में परिवर्तित हो गयी है। तकनीकी विकास के कारण विश्व के लोग हिंदी भाषा सीख रहे हैं। तकनीक के प्रयोग ने भाषा सीखने की प्रक्रिया को विभिन्न भाषा माध्यमों से बिलकुल आसान बना दिया। हिंदी को ग्लोबल बनाने में अनुवाद, पत्रकारिता, टेलीव्हिजन, इंटरनेट, सोशल मीडिया की अहम भूमिका है। है। हिंदी पत्रकारिता ने रोजगार सृजित किए। स्मार्ट फोन भी हिंदी साहित्य के समर्थन हेतु निरंतर कार्य चल रहा है। कई कंपनियाँ हिंदी टंकण, हिंदी वाइस सर्च व हिंदी भाषा में इंटरफेस की सुविधा प्रदान कर रही है। 'LILA' मंत्र आदि के माध्यम से सीखने, ऑनलाइन अभ्यास, उच्चारण सुधार, स्वमूल्यांकन, आदि की सुविधा उपलब्ध है। चारों तरफ 'डिजिटल भारत' की बात हो रही है। सोशल नेटवर्किंग साइट फेसबुक, टेलीग्राम ट्विटर तथा अन्य साईट पर गाँवों को डिजिटल दुनिया से जोड़ने का काम हो रहा है। भारतीय परिक्षेत्र में विभिन्न गाँवों की विभिन्न भाषाएँ भी तकनीकी का हिस्सा होंगी और उनके बीच संप्रेषणीय आदान-प्रदान होगा जिसमें हम भाषायी एकता देख सकेंगे। आज हिंदी में अनेकों ब्लॉग लिखे और पढे जा रहे हैं, इतना ही नहीं समाचार पत्रों ने भी अब नियमित रूप से ब्लॉग छापने शुरू कर दिए हैं। इसी प्रकार हिंदी डिजिटल बन रही है। विश्व की प्रमुख भाषा के रुप में उभरकर आई है।

संदर्भ-

1. https://hi.quora.com
2. https://www.apnimaati.com/2022/09/blog-post_30.html
3. http://www.sahchar.com/2017/07/19
4. https://hi.wikipedia.org/wiki
5. https://shodhhindi.wordpress.com/2018/10/10
6. https://rsaudr.org/show_artical.php?id=1096